

ऊंचे पर्वत शंकर बसे

ऊंचे पर्वत शंकर बसे मै शंकर दे संग,
नी मैं मारगई नी माए एहदी नित घोटदी भंग....

ऊंचे पर्वत बरफा पैदीया ए बर्फानी बाबा,
ना कोई ऐथे महल चोपड़ी ना कुल्ली ना ढाबा,
ए ता नित धुनिया सेके बस्मा ला वे अंग,
नी मैं मारगई नी माए एहदी नित घोटदी भंग...

लोकी बीजे कनका छोले एह ने भंग दे बूटे,
सारे भूत प्रेत ने लेंदे विच नशे दे झूटे,
भर भर बाटे पी बे भोला हो जाए मस्त मलंग,
नी मैं मारगई नी माए एहदी नित घोटदी भंग...

मैनु सपा तो डर लगता ए माला गल विच पावे,
बड़े बड़े सिंगा नंदी ते चढ़ जावे,
लोकी देखन खड़ खड़ ए नू आखन ए भोले दे रंग,
नी मैं मारगई नी माए एहदी नित घोटदी भंग....

डम डम डमरू भम भम भोला ए सारा जग गावे,
एहडी महिमा कोई न समझे न कोई समझावे,
एह तिरलोकी नाथ नी माए जटा दे विच गंग,
नी मैं मारगई नी माए एहदी नित घोटदी भंग....

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/27755/title/unche-parvat-shankar-base>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |